भारत और नेपाल का साहित्यिक संबंध भक्ति साहित्य का एक तुलनात्मक अध्ययन

बीज शब्द : नेपाल भक्ति साहित्य, राम काव्य, कृष्णकाव्य साहित्यिक सम्बन्ध, भारत नेपाल सांस्कृतिक सम्बन्ध

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net

A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research

शोध संचयन

नेपाल के हिन्दी एवं नेपाली भाषा में रचित भक्ति साहित्य भारत एवं नेपाल के बीच सांस्कृतिक सेतु की तरह है। इन दोनों देशों कीभावधारा एक रही है, जिसके कारण भारत के हिन्दी भक्ति-साहित्य एवं नेपाली भक्ति साहित्य में अद्‌भुत साम्य है। यह शोध आलेख भक्ति साहित्य के आलोक में भारत नेपाल के संबंधों को अन्वेषित करता है।

आरती सिंह
असि. प्रो., हिन्दी विभाग
महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगलधूसड़, गोरखपुर

भारत के उत्तरी सीमांत पर अवस्थित नेपाल देश की सीमा उत्तर प्रदेश और बिहार राज्य से मिलती है। भाषा के स्तर इस क्षेत्र में हिन्दी और नेपाली बोली जाती है। बोलियों के स्तर पर हिन्दी भाषा की तीन महत्वपूर्ण बोलियों का निकटतम सम्पर्क नेपाली भाषा के साथ है। ये तीन बोलियाँ हैं- मैथिली, भोजपुरी, और अवधी। ''सांस्कृतिक दृष्टि से देखें तो मैथिली मर्यादा पुरूषोत्तम राम की पत्नी सीता की जन्मभूमि मिथिला की बोली है। सीता संस्कृत और हिन्दी के काव्यग्रंथों में मैथिली के नाम से जानी जाती है। राम की जन्मभूमि अवध है। अवध की बोली अवधी का गहन संपर्क भी भाषा के साथ है, किन्तु नेपाल से लगा अवधी का क्षेत्र अपेक्षाकृत कम विस्तार वाला है।''[1]

भारत एवं नेपाल निकटतम पड़ोसी देश है। सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टि से इन दोनों देशों में एकरूपता रही है। नेपाल भारतीय धर्म, सांस्कृति एवं साहित्य से सदैव अनुप्राणित रहा है। भारत और नेपाल के इस एकता के सन्दर्भ में नेपाल नरेश बीर विक्रम शाहदेव ने कहा था कि ''भारत और नेपाल के संबंध का एकमात्र कारण है भौगोलिक समरूपता एवं सांस्कृतिक साहित्यिक एकता। भारत और नेपाल की भौगोलिक सांस्कृतिक एकता ने दोनों देशों के निकट सामाजिक आर्थिक संबंध में अपना ठोस रूप पा लिया है। यही अकेले दोनों देशों के लंबे और लगातार मैत्री संबंध जो सीता और बुद्ध जैसे प्राचीन काल से चला आ रहा है, की व्याख्या करता है।''[2]

भारत में हिन्दी का विकास होने पर इसका प्रभाव नेपाल पर भी पड़ा है। विद्यापति कबीर, सूर, तुलसी, मीरा आदि के पदों का नेपाल में भी प्रचार हुआ। नेपाल के लगभग सभी मन्दिरों में लिखित रूप में भारत के इन हिन्दी कवियों के पदों के संकलन मिलते हैं। रात्रि में इन्हीं पदों को गा-गा कर नेपाल के भक्त गण मन्दिरों में कीर्तन भजन करते हैं।

संस्कृत की भाँति हिन्दी ने भी नेपालियों को पर्याप्त मोहित किया और इस भाषा के प्रति भी गत कई शताब्दियों से नेपाल निवासियों का अत्यन्त मोह रहा है। नेपाल में हिन्दी को 'पक्की भाषा' कहा जाता है। ''नेपाल का कोई व्यक्ति जब साधु-सन्यासी बन जाता है तो उसे हिन्दी बोलना आवश्यक हो जाता है। यदि वह नेवारी अथवा नेपाली भाषा में कोई उपदेश देता है तो उसकी 'भाषा कच्ची' कहकर उसके उपदेशों को महत्व नहीं दिया जाता है। टूटी-फूटी हिन्दी में भी यदि वह प्रवचन करता है तो उसे देववाणी अथवा प्रमाणिक बात मानकर नेपाल निवासी उसके उपदेशों को श्रद्धापूर्वक ग्रहण करते हैं।''[3]

नेपाल में हिन्दी कविता के प्रचीनतम् रूप का दर्शन नेपाल के उपत्यका रूचिर चर्या पदों और मोंरग में रचित पदों के रूप में होता है। नेपाल की हिन्दी काव्य परम्परा का प्रथम सोपान इन्हीं रचनाओं को उचित मानना होगा। नेपाल में हिन्दी कविता के विकास का दूसरा एवं वास्तविक चरण 'अत्यका' में मल्लों के शासन काल में ही आरम्भ होता है।

शाहकाल में नेपाल में निर्गुण मत संबंधी 'जोसमणी' मत की स्थापना हुई। इस मत के संस्थापक पश्चिमी नेपाल के शशिधर स्वामी थे। उन्हें इस मत की स्थापना की प्रेरणा बिहार के दरिया साहब से मिली। दास सतदित, अगमदिल, प्रेयदिल, ज्ञानदिलदास, धिजेदिलदास, रामबहादुर आदि इस मत के अनुयायी कवि हुए। इन सबकी भाषा हिन्दी सन्त कवियों की भाँति सधुक्कड़ी हिन्दी है जिसमें यत्र-तत्र नेपाली शब्दों का भी पुट है।

काठमाण्डू के पं. मुरलीधर भट्टराई ने भी हिन्दी में कुछ काव्य रचना की है जिसमें नेपाल के साथ-साथ उन्होंने भारत के प्रति भी अपने प्रगाढ़ प्रेम का परिचय दिया है। नेपाल का तराई प्रदेश जो वस्तुत: हिन्दी भाषी प्रदेश है, हिन्दी काव्य रचना का केन्द्र रहा है। इसमें सर्वोपरि स्थान है जनक के मधुरोपासक राम भक्त कवियों का। नेपाल में कबीर और नानक के भजन बहुत लोकप्रीय रहे हैं। भारतीय हिन्दी सन्त काव्य का निर्माण, भारतीय ब्राह्मणवाद, सूफियों के भावनात्मक और हष्ठयोगियों के साधनात्मक रहस्यवाद, वैष्णवों के अहिंसावाद और प्रपत्तिवाद के मेल से हुआ। नेपाली सन्त काव्य का निर्माण भी उपर्युक्त तत्वों से हुआ है। उसमें केवल सूफियों के भावनात्मक निर्गुण काव्य में मिलती है। हिन्दी की भाँति नेपाल के सन्त मत का भी ईश्वर एक है। उसका रूप और आकार नहीं है। वह निर्गुण और सगुण से परे है, वह संसार के घट-घट में व्याप्त है। हिन्दी सन्त काव्य में माया संसार को ईश्वर से विमुख करती है। नेपाल के कवियों ने भी माया की निन्दा की है-

जो प्रभु जन्म दिये, सो प्रभु जाय बिसारा।
माया रूप सकल घट छाये, घट घनी लागे विकारा।।

-सतदिल

कबीर ने रूपकों को विशेषकर दो रूपों में बाँधा है- एक तो उलटबासी का रूप और दसरा आश्चर्यजनक घटनाओं की सृष्टि। इन दोनों का संबंध रहस्यवाद से माना गया है। नेपाली निर्गुण काव्य में भी यह भावना पायी जाती है। सन्तमत की अन्य कई विशेषताएँ भी नेपाल के हिन्दी निर्गुण काव्य में पायी जाती हैं। भारतीय हिन्दी सन्त कवियों में खण्डनात्मक वृत्ति पर्याप्त पायी जाती है। जाति-पाति के भेदभाव, छुआछूत, तीर्थातन, मूर्तिपूजा, हजा-नमाज आदि धर्म के बाह्यचारों का सन्त कवियों ने एक स्वर में खण्डन किया है, परन्तु नेपाली सन्त काव्य में यह वृत्ति नहीं पायी जाती है। झूठ, छल, फरेब, परनिन्दा का निषेध हमें यहाँ के निर्गुण काव्य में अवश्य मिलता है।

भारतीय सन्त काव्य परम्परा में कबीर ने माया को 'ठगिनी' रूप में प्रस्तुत किया है। इसी तरह नेपाली सन्त कवि मुकुन्ददास भी कहते हैं- ''कबीर ने सूफियों के भावनात्मक रहस्यावाद को ग्रहण कर अपने अनेक पदों में जीवात्मा को पत्नी और परमात्मा की पति रूप में चित्रित किया है। शशिधर ने भी अपने पदों में स्वयं को पत्नी रूप में प्रस्तुत किया है।'' जिस प्रकार कबीरदास कहते हैं कि ''गुरू गोविन्द दोउ खड़े काके लागूं पाय.....।'' उसी रूप में नेपाली कवि अभयानन्द ने कहा है- ''गुरू भजन पर करो भरोसा, और न कुछ संसार में।।''[4]

हिन्दी सन्त काव्य की तुलना में नेपाली निर्गुण काव्य की भाषा अपरिष्कृत है। नेपाल में हिन्दी सन्त काव्य के निर्माण में वहाँ के 'जोसमणीमत' का महत्वपूर्ण योग है। इस मत के अनेक अनुयायियों ने कबीर की भाँति सधुक्कड़ी हिन्दी में निर्गुण पदों की रचना की है। सन्त ज्ञान दिलदास इस मत के प्रमुख अनुयायियों में से थे। कबीर की भाँति सन्त दिलदास ने भी साथक के लिए एक मत सत्गुरू के नाम को ही अवलम्ब माना है। उसी की कृपा और उसके नाम का सहारा लेकर साधक उस अगम प्रदेश में पहुँच सकता है- ''सत्गुरू नाम अधार हो मेरे संतो। सत्गुरू नाम अधार।।''[5]

नेपाल के लेखकों ने हिन्दी भाषा के प्रयोग के अतिरिक्त हिन्दी में काव्य रचना भी किये है। यह नेपाल निवासियों का हिन्दी के प्रति प्रेम का परिचायक है। भारत की ही भाँति नेपाल में भी हिन्दी में कृष्ण काव्य की रचना हुई। जयदेव और विद्यापति के गीतों का नेपाल में कई शताब्दियों से बड़ा प्रचार रहा है। आज भी नेपाल उपत्यका के काठमाण्डू, पाटन और भक्तपुर नगरों के अनेक टोलो में जयदेव और विद्यापति की गीत बड़ी रूचि से गाये जाते हैं। कालान्तर में सूरदास के पदों का भी नेपाल में प्रचार हुआ। परिणामस्वरूप हिन्दी (ब्रजभाषा) में भी वहाँ अनेक लोगों ने कृष्ण काव्य की रचना की।

नरहरि को नेपाल में हिन्दी कृष्ण काव्य का प्रथम रचयिता माना जाता है। नेपाल के बरूत बहादुर श्रेष्ठ, नारायण भक्त, रामअधारदास, मथुरादास साहू तथा देवनारायण झा ने अपेक्षाकृत कुछ आधिक लिखा है। अत: यहाँ कृष्णकाव्य का वास्तविक रचयिता इन्हें ही माना जायेगा। इन कवियों ने बाल चेष्टाओं, माखन चोरी, गोप सखाओं सहित यमुनान्तर गेंद खेलने, गोचारण, पूतना वकासुर वध, वात्सल्य, श्रृंगार वर्णन, विप्रलंभ श्रृंगार एवं विविध लीलाओं का बड़ा मार्मिक वर्णन किया।

''नेपाल का हिन्दी कृष्णकाव्य हमारे हिन्दी कृष्णकाव्य से पूर्णत: प्रभावित है। यह काव्य भी फुटकर पदों और गीतों में मिलता है। नेपाली कवियों ने भी ब्रजभाषा को कृष्णकाव्य का माध्यम बनाया है, परन्तु अष्टछाप के कवियों जैसी भाषा में निखार नहीं है और

सूरदास जैसा विशद् श्रृंगार वर्णन किसी कवि ने नहीं किया है।''[6]

नेपाल के हिन्दी कृष्ण काव्य की भाँति राम काव्य के दो रूप मिलते हैं। एक मधुरोपासना पूर्ण शर्सस कवियों द्वारा रचित राम काव्य दूसरा तुलसीदास के रामचरितमानस के अनुकरण पर रचित विशुद्ध राम काव्य। विशुद्ध राम काव्य के रचयिताओं में नेपाल के हिन्दी कवियों में मथुरा प्रसाद का नाम सर्वोपरि है। ये राम के अनन्य भक्त थे। नेपाल में हिन्दी राम काव्य की रचना में पं. रामअधार का महत्वपूर्ण योगदान है। इनके द्वारा रचित रामपरक पदों का संग्रह ''रामावतार भजन'' शीर्षक से है।

रामजन्म, बालक्रीड़ा, रूपवर्णन, मुनि का आगमन, रामलक्ष्मण जनकपुर गमन, सीता का रूप वर्णन, फुलवारी में राम सीता का परस्पर दर्शन, धनुष भंग राम सीता वर वधू रूप वर्णन तथा सीता की खोज में हनुमान लंका गमन आदि प्रसंगों से सम्बन्धित पद एवं गीत हैं।

नेपाली कृष्ण काव्य के कवि भारतीय कवि तुलसीदास से प्रभावित हैं। रामअधार दास, रामधरदास, गोकुल गिरि जी, ओरी लाल कुलपति त्रिपाठी, धरनीदास, मंगल कुमार, खेतुबाल, विकलदास, धिर्रादेवी आदि कवियों के रामपरक पद मिलते हैं।

''नेपाल के सन्त और कृष्ण काव्य की ही भाँति यहाँ का हिन्दी राम काव्य भी भारतीय हिन्दी राम काव्य के ही अनुकरण पर रचित है। नेपाल का राम काव्य प्रायः उन सभी विशेषताओं से पूर्ण है जो भारतीय हिन्दी राम काव्य में मिलती है। नेपाल के रामपरक कवियों ने प्रायः तुलसीदास के राम काव्य के अनुकरण पर ही राम काव्य की रचना की है। भारतीय हिन्दी काव्य मे ंसभी रसों का प्रयोग हुआ है, परन्तु नेपाल के राम काव्य में सभी रस नहीं मिलत है। इसमें शान्त रस की प्रधानता है। भारतीय हिन्दी राम काव्य की तुलना में नेपाल का हिन्दी राम काव्य अत्यल्प है।''[7]

भारतीय हिन्दी राम काव्य की तुलना नेपाल के राम काव्य से करते हुए हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि उनका यह काव्य उन कवियों द्वारा रचित है जिनका हिन्दी जगत में अधिक सम्पर्क नहीं रहा है, तब भी यहाँ के कवियों ने हिन्दी में जो रचनाएं की हैं। इसके लिए वह अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

नेपाल के अनेक शासकों की भी हिन्दी में रचनायें मिलती हैं। यहाँ नेपाल के इन्हीं शासकों के हिन्दी प्रेम का संक्षेप में परिचय देना प्रासंगिक होगा। नेपाल के शासकों मे ंजगज्योति मल्ल, प्रताप मल्ल, भूपतीन्द्र मल्ल, जयप्रकाश मल्ल, योगेन्द्र मल्ल, भास्कर मल्ल, जगज्जय मल्ल, विष्णुमल्ल, राज्य प्रकाश मल्ल, नृपेन्द्र मल्ल, जितामित्र मल्ल, रणजीत मल्ल, राज प्रकाश सिंह, प्रताप शाह, विक्रम शाह, राजेद्र विक्रम शाह, जगत शमशेर, इम्मर बहादुर आदि हैं। मल्ल शासकों की रानियों में से भी कुछ की काव्य रचना में रूचि थी जिसमें राज्य लक्ष्मी और इन्द्र लक्ष्मी का नाम महत्वपूर्ण है।

''नेपाल की सन् 1950 की जनक्रान्ति के पश्चात् यहाँ के दो भू. पूर्व प्रधानमन्त्रियों, श्री? प्रसाद कोइराला तथा श्री विश्वेश्वर प्रसाद कोइराला की भी हिन्दी की रचनायें मिलती हैं। ये कोइराला बंधु हिन्दी के लेखक होने के अतिरिक्त नेपाल में हिन्दी के अच्छे समर्थकों में से भी हैं। मातृका प्रसाद जी ने 'कचनार' उपनाम से हिन्दी में कुछ रचनाएं की हैं। गद्य में भी इन्होंने ''नेपाली जनक्रान्ति का इतिहास'' तथा ''मेरे पिता के जीवन की धूपछाह'' शीर्षक से अनेक संस्करण लिखा है। विश्वेश्वर प्रसाद जी ने हिन्दी में अनेक कहानियां लिखी हैं। ये कहानियां ''विशाल भारत'', ''हिमालय'' आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। नेपाल के स्वर्गीय श्री परिविक्रम शाह भी एक अच्छे गीत लेखक थे, परन्तु ये नेपाली भाषा में लिखते थे।''[8]

नेपाली शासकों की रचनाएं यद्यपि बहुत साधारण कोटि की हैं, फिर भी हिन्दी में काव्य रचना का इन लोगों ने हिन्दी साहित्य के प्रति अपने जिसे प्रेम का परिचय दिया है उससे हमें उनके प्रति आभारी होना चाहिए।

सन्दर्भः-

1. प्रो. रामदेव शुक्ल, भारत और नेपाल का सांस्कृतिक एकता, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा, पृ. 18, 2008
2. प्रो. रामदेव शुक्ल, पूर्वोक्त, पृ. 19
3. डॉ. रूद्रेन्द्र नाथ शर्मा, नेपाल का हिन्दी साहित्य, प्रिया प्रकाशन लखनऊ, पृ. 1, 2010
4. वही, पृ. 60
5. वही, पृ. 78
6. वही, पृ. 155
7. डॉ. रूद्रेन्द्र नाथ शर्मा, नेपाल का हिन्दी राम काव्य, 17 शंकर नगर लखनऊ, पृ. 177, 2010
8. डॉ. रूद्रेन्द्र नाथ शर्मा, पूर्वोद्धत, सन्दर्भ संख्या-3, पृ. 115

◆◆◆